

विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 20-02-2021

वर्ग- सप्तम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

संस्कृत में तद्धित प्रत्यय

तद्धित शब्द का अर्थ है- तेभ्यः प्रयोगेभ्यः हिताः, इति तद्धिताः अर्थात् ऐसे प्रत्यय जिनका भव, रक्त, समूह, निवृत्त, निवास, जात, भव, विकार आदि अनेक अर्थों में प्रत्यय होते हैं । तद्धित प्रत्यय सुबन्त से विहित होते हैं। यह एक पदविधि है। तद्धित में संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण आदि शब्दों के साथ प्रत्यय को जोड़कर नये शब्दों को बनाते हैं। जैसे- गर्गस्य अपत्यम् = गार्ग्यः (गर्ग + यञ्)।

यहाँ 'गर्ग' इस संज्ञावाचक शब्द से अपत्यार्थ (सन्तान के अर्थ) में यञ् प्रत्यय को जोड़कर कर -गार्ग्यः बनाया गया। गार्ग्यः का अर्थ होगा- गर्ग की सन्तान।

यहाँ आप गर्ग शब्द के स्वरूप में परिवर्तन होते देख रहे होंगे। गर्ग के आदि अकार को आ होकर गा हो गया।

तद्धित प्रत्ययों के कारण कहीं पर आदि अक्षर में वृद्धि, कहीं प्रत्ययों के स्वरूप में परिवर्तन हो जाता है। तद्धित प्रत्ययों के कारण संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण आदि शब्दों में होने वाले मुख्य परिवर्तन को जान लेने के बाद तद्धित प्रत्यय से बने शब्दों को जानना अधिक आसान हो जाएगा। इसके कतिपय नियम इस प्रकार हैं-

नियम 1- सामान्यतः प्रत्यय के अन्त में आये व्यञ्जन वर्ण का हलन्त्यम् सूत्र से इत् संज्ञा होकर लोप हो जाता है।

जैसे - अण्, नञ्, स्नञ् इञ् के अन्तिम कर्ण को लोप दो जाता है।

नियम 2- जिस शब्द से 'क्', 'ञ्' अथवा 'ण्' की इत् संज्ञा वाला प्रत्यय लगाया गया हो, उसके आदि स्वर की वृद्धि हो जाती है।

जैसे- दक्षस्य अपत्यं पुमान् में दक्ष + इञ् प्रत्यय में दक्ष के आदि अकार की वृद्धि होकर दाक्षिः बना।

गणपति + अण् = ग् + अ → आ (वृद्धि आदेश) = गाणपतम्।

वर्षा + ठक् (इक्) = आदि अकार को वृद्धि आ = वार्षिकः।

शिव + अण् = आदि इकार को वृद्धि ऐ = शैवः

नियम 3 - स्वर अथवा य' से आरम्भ होने वाले प्रत्यय यदि प्रयुक्त हुए हों उन प्रत्ययों से पहले, शब्दों के अन्त में स्थित, अ, आ, इ, ई का लोप हो जाता है तथा उ या ऊ को गुण 'ओ' आदेश हो जाता है।

जैसे- दक्ष + इ = द (अ को आ वृद्धि आदेश) = दाक्ष + अ(लोप) + इ = दाक्षिः।

बाहु + इञ् = बाहु + इ में उ को गुण ओ हो गया -
बाहविः।

नियम 4 - प्रत्यय के आदि फ ढ ख छ तथा घ को
क्रमशः आयन्, एय्, ईन्, ईय्, इय् आदेश हो जाता है।

नियम 5 - जहाँ सन्धि की जा चुकी हो ऐसे षष्ठी
विभक्ति से समर्थ अर्थ में प्रत्यय होते हैं।

इस पाठ में हम प्रमुख तद्धित प्रत्ययों का वर्गीकरण
करेंगे -

